इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य, प्राप्य उद्देश्य तथा मूल्य

[AIMS, OBJECTIVES AND VALUES OF TEACHING HISTORY]

"The teaching of history in schools should lead to the realization that history is the sutdy of the process of social change and development."

—A Hand-book for History Teachers—NCERT

विषय-प्रवेश
(INTRODUCTION)

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए उद्देश्य का ज्ञान होना परमावश्यक है। अतः शिक्षण-कार्य उद्देश्य के अभाव में सुचारु रूप से संचालित नहीं किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में **बी. डी. भाटिया** ने लिखा है—**"उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपने लक्ष्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार-विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी।"**

"Without the knowledge of aims, the educator is like a sailor who does not know his goal or his destination, and the child is like a rudderless vessel which will be driften along some-where ashore." **—B. D. Bhatia**

स्वतः प्रश्न उठता है कि इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य क्या हैं ? परन्तु इनको जानने से पूर्व यह जानना अनिवार्य हो जाता है कि इन उद्देश्यों के निर्धारण का आधार क्या है ?

उद्देश्यों के निर्धारक (Determinants of the Aims)—'शिक्षा' समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। अतः इस बात का सदैव प्रयास किया गया है कि समाज के उद्देश्य

समाज की माँगों, आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुकूल हों। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विभिन्न देशों में विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का निर्माण किया गया। परन्तु आधुनिक शिक्षा में बालक को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया जाने लगा है। इस कारण शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में उनकी आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं आदि का भी ध्यान रखा जाने लगा है। समाज यह निर्धारित करता है कि "क्या प्राप्त किया जाना चाहिए ?" शिक्षक यह निर्धारित करता है कि "क्या प्राप्त किया जा सकता है ?" इससे निकला हुआ परिणाम ही शैक्षिक उद्देश्य होता है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारक—समाज, शिक्षक, छात्र तथा प्रचलित जीवन-दर्शन है। यद्यपि शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में व्यवस्थापिका, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री आदि भी भाग लेते हैं। परन्तु वे केवल दिशा का निर्धारण करते हैं।

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY)

प्रत्येक विषय के उद्देश्य सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं और शिक्षा के उद्देश्य उक्त वर्णित निर्धारकों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। हमारे देश में **'माध्यमिक शिक्षा-आयोग'** ने माध्यमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये—

1. लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास।
2. नेतृत्व का विकास।
3. व्यक्तित्व का विकास।
4. व्यावसायिक कुशलता का विकास।
5. चरित्र-निर्माण आदि।

उक्त समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नहीं हो सकती। परन्तु इतिहास-शिक्षण इन उद्देश्यों की प्राप्ति में बहुत सहायक है। यह सत्य है कि इतिहास प्रत्यक्ष रूप से रोटी तथा मक्खन देने वाला विषय नहीं है, परन्तु इसके द्वारा छात्रों के चरित्र-निर्माण, नेतृत्व, नागरिकता के गुणों आदि के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता है।

शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कालों में इतिहास-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। उदाहरणार्थ—**लीवी** (Livy) तथा **थ्यूसीडाइड्स** (Thucydides) के समय में इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य स्मरणीय वस्तुओं को सुरक्षित रखना तथा महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान पुरानी सन्तति द्वारा नवीन सन्तति को सौंपना था। प्राचीनकाल में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य निर्देश देना या आश्रयदाताओं को प्रसन्न रखना तथा दोनों; अर्थात् निर्देश देना तथा आश्रयदाताओं को प्रसन्न रखना था। मध्यकाल में इसका उद्देश्य अपने देश के अतीत के लिए आदत तथा प्रेम उत्पन्न करना हो गया। आधुनिक काल में इसका प्रमुख उद्देश्य अतीत की सहायता से

वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया। इसके अतिरिक्त सत्य, देश-प्रेम, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास आदि भी इसके उद्देश्य माने गये।

हम इतिहास-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का विवेचन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे—

(अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य।

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य।

(अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य (General Aims of Teaching History)

(1) इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना (To Create Interest for History)—विभिन्न विद्वानों ने इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करना माना है। जॉन डीवी (John Dewey) का मत है—**"हमारी इतिहास में इसलिए रुचि नहीं है कि वह अतीत के गौरव को बताता है, बल्कि इसमें इसलिए रुचि है क्योंकि इसके द्वारा वर्तमान सामाजिक जीवन के विभिन्न स्वरूपों तथा शक्तियों का स्पष्टीकरण किया जाता है। साथ ही यह हमें भविष्य के विषय में सोचने के लिए तैयार करता है।"** इस कारण इतिहास के शिक्षक का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह छात्रों में इतिहास के प्रति रुचि जाग्रत करे। वस्तुतः यह वर्तमान ही है जो हमें अपनी ओर आकर्षित करता है और हम उसे जानने के लिए तत्पर होते हैं। इसी कारण हम अतीत की खोज करता हैं। हम अतीत की खोज इस कारण नहीं करते हैं कि हमें ऐसा करना रोचक मालूम पड़ता है वरन् इसलिए करते हैं कि आज के मानव के विचारों एवं कार्यों की जड़ अतीत में निहित है। अतः इतिहास के शिक्षक को छात्रों के समक्ष अतीत के इतिहास द्वारा वर्तमान को स्पष्ट करके उनमें इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करनी चाहिए।

(2) वर्तमान को स्पष्ट करना (To Explain the Present)—इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना है। कार्ल ऑगस्त मुलर का मत है, "इतिहास द्वारा हम अपने काल की क्रियाओं का अर्थ लगा सकते हैं। यदि इतिहास नहीं होगा तो विद्यालय अध्ययन तथा अध्यापन निरर्थक है, क्योंकि इतिहास हमारे वर्तमान को स्पष्ट करता है।" इतिहास के अभाव में सामाजिक वातावरण का कोई अर्थ नहीं है। अतः बालक को समाज में व्यवस्थित होने के लिए अपने सामाजिक वातावरण या अपनी प्रचलित परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः अतीत द्वारा इस सामाजिक वातावरण को अर्थपूर्ण बनाया जाता है। इसी कारण इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया है।

(3) मानसिक शक्तियों का विकास (Development of Mental Powers)—इतिहास द्वारा छात्रों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है। इसके अध्ययन से

छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों के विकास में बहुत सहायता मिलती है। छात्र इसके द्वारा विभिन्न विवादास्पद प्रश्नों एवं समस्याओं के विषय में अपना स्वतन्त्र निर्णय बनाने में समर्थ हो जाता है। अतः इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास करना माना गया है।

(4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Outlook)—विद्वानों का मत है कि इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना होना चाहिए। उनका मत है कि इसके लिए इतिहास का अध्यापन इस प्रकार किया जाय जिससे वे अवैज्ञानिक वस्तुओं को त्यागने में समर्थ हो सकें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए उनकी निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति तथा सत्य निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त छात्रों को निष्पक्षता एवं योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित, वर्गीकृत एवं तुलना करने के योग्य बनाया जाय।

(5) राष्ट्रीय भावना का विकास (Development of National Feeling)—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य राष्ट्रीय भावना का विकास माना गया है। बहुत-से विद्वान देश-प्रेम की भावना के विकास को इतिहास-शिक्षण का एक मूल्य मानते हैं। वस्तुतः विभिन्न देशों एवं विभिन्न कालों में देश-प्रेम की भावना का विकास इतिहास-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य रहा है। जर्मनी ने अपने विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान इसीलिए प्रदान किया था कि इसके द्वारा छात्रों में देश-भक्ति की भावना का विकास सरलता से किया जा सकता है। इतिहास छात्रों को उनके पूर्वजों की देनों का ज्ञान प्रदान करके उनमें देश-भक्ति की भावना विकसित करता है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास (Development of International Understanding)—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य—छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्रों को निष्पक्षता तथा सच्चाई के साथ प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जाना आवश्यक है। **सी. पी. हिल** (C. P. Hill) ने लिखा है कि इतिहास-शिक्षक इस विषय का अध्यापन इस प्रकार करे जिससे छात्र 'सत्य' की खोज के लिए तत्पर हो सकें तथा वे विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में समर्थ हो सकें। इस प्रकार के ज्ञान से उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता है।

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य (Specific Aims of Teaching History)

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को रखा जा सकता है—

(1) ऐतिहासिक विधि का ज्ञान कराना।

(2) समय-ज्ञान की भावना को विकसित करते हुए स्थान तथा समय में सम्बन्ध स्थापित करना।

(3) मानव-उन्नति का काल-क्रम के अनुसार अध्ययन करना।

(4) छात्रों को उन समस्याओं तथा कठिनाइयों से अवगत कराना जो मानव के समक्ष उसके सामाजिक विकास में आयी थीं।

(5) छात्रों को इतिहास का ज्ञान इस प्रकार प्रदान करना जिससे उनमें निम्न प्रकार के भाव उत्पन्न हो सकें—

(i) सूचनाएँ कहाँ और किस प्रकार प्राप्त की जायें ?

(ii) प्रमाणों को किस प्रकार जाँचा जाय ?

(iii) तार्किक निष्कर्ष किस प्रकार निकाले जायें ?

(iv) तथ्यों को किस प्रकार संगठित, विश्लेषित एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।